Lecture - ~~186~~ 187

हड़प्पा सभ्यता

- Mamta Rani
Deptt. of History
Guest Assistant Professor
S.N.S.R.K.S College,
Saharsa.

परिणाम स्वरूप कुछ समृद्ध ग्रामीण बस्तियाँ अस्तित्व में आई और फिर 3200 ई० पू० के पश्चात् आरंभिक हड़प्पाई चरण शुरू हुआ। इस काल में हल, चाक एवं ताम्बे के प्रयोग ने उत्पादन को प्रोत्साहन दिया फिर गाड़ियों के विकास के परिणाम स्वरूप यातायात कि प्रणाली में सुधार हुआ और हवि अधिशेष का संचय करना संभव हुआ। एक शासक वर्ग एवं पुरोहित वर्ग की उत्पत्ति ने अधिशेष के संग्रह में अहम् भूमिका निभाई इस प्रकार एक नगरीय सभ्यता का विकास हुआ इस तरह इस मत के समर्थक विद्वान हड़प्पा सभ्यता का विकास सोथी-सिसवाल संस्कृति, अमरीनाल संस्कृति, कोटदीजी संस्कृति आदि से मानते हैं। हालांकि इस विचार में भी थोड़ी अस्पष्टता है यथा कई ऐसे विकसित हड़प्पाई स्थल हैं जैसे लोथल, चंहुदड़ो, जिनके आधार में हम हड़प्पाई चरण नहीं पाते हैं उसी प्रकार अनेक ऐसे हड़प्पाई स्थल हैं जिन्हें इस रूप में देखा जा सकता है। फिर भी क्रमिक उद्भव का सिद्धान्त ही हड़प्पा सभ्यता की उद्भव की वास्तविक व्याख्या करता जान पड़ता है। आगे अधिक से अधिक स्थलों की क्षैतिज खुदाई से यह मत अधिक स्पष्ट हो सकता है।

विवादास्पद मुद्दा रहा है। हड़प्पा सभ्यता के पतन की व्याख्या करते हुए आर्य आक्रमण की अवधारणा दी है' किन्तु परीक्षण करने पर उनका विचार विश्वसनीय नहीं लगता।

अपने मत के पक्ष में व्हीलर महोदय पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत प्रस्तुत करते हैं उन्होंने मोहनजोदड़ो से 26 नरकंकाल प्रस्तुत किये हैं जिसके सर पर पैने वार के चिन्ह हैं साथ ही हड़प्पा से 'H कब्रगाह' प्रस्तुत करते हैं तथा साहित्यिक साक्ष्य के रूप में ऋग्वेद में वर्णित पुरंदर तथा इन्द्रयुक्त शब्द का दृष्टांत प्रस्तुत किया है। किन्तु उनके द्वारा प्रस्तुत पुरातात्विक साक्ष्य अपर्याप्त है तथा साहित्यिक साक्ष्य संदिग्ध। उदाहरण के लिए महज 26 नरकंकाल पर आर्य आक्रमण की अवधारणा तार्किक नहीं लगती है विशेषकर इसलिए कि मोहनजोदड़ो जैसे स्थल का पतन तथा वैदिक आर्यों के आक्रमण के बीच 300 वर्ष से 400 वर्ष के बीच का कालान्तराल है। फिर नवीन शोधों के आधार पर यह बात पुष्ट हो चुकी है कि 'कब्रगाह H' से प्राप्त नरकंकाल इस स्थल के पतन के बाद के काल का है अब जहाँ तक ऋग्वेद में उद्धरण का प्रश्न है तो हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यह किसी एक काल की कृति नहीं है वरन इसे बहुत बाद में